भारत सरकार

कृषि एवं किसान कल्‍याण मंत्रालय

कृषि, सहकारिता एवं किसान कल्‍याण विभाग

**राज्‍य सभा**

**अतारांकित प्रश्‍न संख्‍या 522**

**14 दिसंबर, 2018 को उत्‍तरार्थ**

**विषय: किसानों की औसत आय**

**522. श्री रवि प्रकाश वर्माः**

**श्री नीरज शेखरः**

**क्या कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः**

(क) क्या नाबार्ड द्वारा हाल ही में जारी किए गए सर्वेक्षण के अनुसार 2012-13 से 2016-17 तक चार वर्षों की बीच की अवधि में किसानों की औसत आय में महज 2505 रुपये की वृद्धि हुई है;

(ख) यदि हां, तो तत्संबंधी राज्य-वार ब्यौरा क्या है;

(ग) क्या सरकार को जानकारी है कि किसानों की आय में हुई वृद्धि की तुलना में उत्पादन की लागत में अधिक वृद्धि हुई है; और

(घ) यदि हां, तो सरकार द्वारा अपने कार्यकाल के अंतिम कुछ महीनों के दौरान कृषि को लाभदायक बनाने के लिए किए जाने वाले उपायों का ब्यौरा क्या है?

**उत्‍तर**

**कृषि एवं किसान कल्‍याण मंत्रालय में राज्‍य मंत्री**

**(श्री गजेन्‍द्र सिंह शेखावत)**

(क) और (ख): नाबार्ड द्वारा संचालित अखिल भारतीय ग्रामीण वित्‍तीय समावेशन सर्वेक्षण के अनुसार कृषि वर्ष (एवाई) 2015-16 के संदर्भ के लिए प्रति कृषि परिवार औसत मासिक आय 8931 रूपए आकलित है। इससे पहले, राष्‍ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण कार्यालय (एनएसएसओ) ने संदर्भ कृषि वर्ष 2012-13 के लिए ‘कृषि परिवारों का स्‍थिति आकलन सर्वेक्षण’ संचालित किया था जिसमें, अन्‍य बातों के साथ-साथ, प्रति कृषि परिवार औसत मासिक आय का आकलन 6426 रूपए था। इस प्रकार, एनएसएसओ 2012-13 के आंकड़े से तुलना करने पर, तीन वर्षों की अवधि में अर्थात् 2012-13 से 2015-16 के दौरान प्रति कृषि परिवार औसत मासिक आय में 2505 रूपए की वृद्धि हुई है। कृषि परिवारों के औसत मासिक आय का राज्‍य-वार ब्‍यौरा **अनुबंध** में दिया गया है।

(ग) खेती, पशुपालन, मजदूरी/वेतनभोगी नियोजन, गैर-कृषि उद्यमों आदि सहित विभिन्‍न स्रोतों से प्रति कृषि परिवार औसत मासिक आय में 2012-13 से 2015-16 के बीच 39.0 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। इस अवधि के दौरान, अखिल भारतीय खरीफ फसल संयुक्‍त आदान सूचकांक 21.3 प्रतिशत बढ़ा है और रबी फसल संयुक्‍त आदान सूचकांक 29.5 प्रतिशत बढ़ा है। इसके अलावा, यह देखना सूचनाप्रद है कि कृषि और संबद्ध क्षेत्र के मामले में उत्‍पाद मूल्‍य और मूल्‍यवर्धन का अनुपात लगभग 77 प्रतिशत है।

किसानों को उत्‍पादन लागत पर पर्याप्‍त मूल्‍य उपलब्‍ध कराने के लिए, सरकार ने अधिसूचित फसलों के न्‍यूनतम समर्थन मूल्‍य (एमएसपी) में लगातार वृद्धि की है। 2018-19 मौसम के लिए सरकार ने सभी अधिदेशित फसलों के एमएसपी में महत्‍वपूर्ण वृद्धि की है। सरकार का यह निर्णय ऐतिहासिक है क्‍योंकि यह पहली बार सभी अधिदेशित फसलों के लिए उत्‍पादन लागत पर 50 प्रतिशत लाभ देने संबंधी किसानों के प्रति प्रतिबद्धता को पूरा करता है।

(घ) कृषि एक राज्‍य विषय है और कृषि क्षेत्र के वृद्धि और विकास की प्राथमिक जिम्‍मेदारी राज्‍य सरकारों की है। तथापि, भारत सरकार बजटीय समर्थन और विभिन्‍न योजनाओं/कार्यक्रमों के कार्यान्‍वयन के माध्‍यम से राज्‍य सरकारों के प्रयासों में सहायता करती है। सरकार द्वारा कृषि की लाभदेयता में सुधार के लिए कार्यान्‍वित की जा रही कुछ मुख्‍य योजनाओं में प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना (पीएमकेएसवाई), परंपरागत कृषि विकास योजना (पीकेवीवाई), मृदा स्‍वास्‍थ्‍य कार्ड, नीम लेपित यूरिया, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना (पीएमएफबीवाई), राष्‍ट्रीय कृषि बाजार योजना (ई-एनएएम), एकीकृत बागवानी विकास मिशन (एमआईडीएच), राष्‍ट्रीय सतत कृषि मिशन (एनएमएसए), राष्‍ट्रीय बांस मिशन, नीली क्रांति, राष्‍ट्रीय गोकुल मिशन आदि शामिल हैं।

इसके अलावा, कृषि उत्‍पादन और उत्‍पादकता बढ़ाने के लिए किसानों हेतु लाभकारी तथा स्‍थिर मूल्‍य स्‍थिति का आश्‍वासन देने हेतु एक समग्र व्‍यवस्‍था उपलब्‍ध कराने के लिए सरकार ने हाल ही में समग्र योजना ‘प्रधानमंत्री अन्‍नदाता आय संरक्षण अभियान’ (पीएम-आशा) शुरु की है। इस योजना में दलहन और तिलहन के लिए मूल्‍य समर्थन योजना (पीएसएस), भावांतर भुगतान योजना (पीडीपीएस) और तिलहन के लिए प्रायौगिक आधार पर निजी खरीद और भंडारण योजना (पीपीएसएस) शामिल हैं।

**अनुबंध**

**दिनांक 14.12.2018 को उत्‍तर के लिए राज्‍य सभा अतारांकित प्रश्‍न संख्‍या 522 के भाग (क) और (ख) के उत्‍तर में उल्‍लिखित अनुबंध**

|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
|  | **कृषि परिवारों की औसत आय (रूपए प्रति माह)** | | |
| **राज्‍य** | **एनएसएसओ द्वारा स्‍थिति आकलन सर्वेक्षण (2012-13)** | **नाबार्ड द्वारा अखिल भारतीय वित्‍तीय समावेशन सर्वेक्षण (2015-16)** | **आय में वृद्धि (2012-13 की तुलना में 2015-16)** |
| आंध्र प्रदेश | 5979 | 6920 | 941 |
| असम | 6695 | 9878 | 3183 |
| बिहार | 3558 | 7175 | 3617 |
| छत्‍तीसगढ़ | 5177 | 8580 | 3403 |
| गुजरात | 7926 | 11899 | 3973 |
| हरियाणा | 14434 | 18496 | 4062 |
| झारखंड | 4721 | 6991 | 2270 |
| कर्नाटक | 8832 | 10603 | 1771 |
| केरल | 11888 | 16927 | 5039 |
| मध्‍य प्रदेश | 6210 | 7919 | 1709 |
| महाराष्‍ट्र | 7386 | 10268 | 2882 |
| ओडिशा | 4976 | 7731 | 2755 |
| पंजाब | 18059 | 23133 | 5074 |
| राजस्‍थान | 7350 | 9013 | 1663 |
| तमिलनाडु | 6980 | 9775 | 2795 |
| तेलांगाना | 6311 | 8951 | 2640 |
| उत्‍तर प्रदेश | 4701 | 6668 | 1967 |
| पश्‍चिम बंगाल | 3980 | 7756 | 3776 |
| **अखिल भारत** | **6426** | **8931** | **2505** |

टिप्‍पणी: एनएसएसओ के लिए संदर्भ वर्ष 2012-13 था जबकि नाबार्ड द्वारा संचालित अखिल भारतीय ग्रामीण वित्‍तीय समावेशन सर्वेक्षण के लिए संदर्भ वर्ष 2015-16 था।

\*\*\*\*\*